P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

अमूर्त कला में कासिमीर मालेविच की सर्वोच्चवादी शैली

आई. यू. खान
एसोसिएट प्रोफेसर,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

राजकुमार मीणा
शोधार्थी,
चित्रकला विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

कासिमीर मालेविच का जन्म 23 फरवरी 1878 ई. को मास्को शहर में हुआ। इन्होंने ज्यामितीय आकारों के साथ अमूर्त चित्रण कार्य में अपनी पहचान बनाई। मालेविच की कला शैली को सर्वोच्चवाद के नाम से जाना जाता है। इनके ज्यामितीय आकार के अमूर्त सृजन को सुपरमेटिज्म कम्पोजीशन कहा जाता है। उनकी प्रसिद्ध रचना 'ब्लैक स्क्वायर' को उनकी मृत्यु शय्या ऊपर दीवार पर लटका दिया गया था। सर्वोच्चवाद का उदय 1913 में मास्को शहर में हुआ व उसके प्रणेता कासिमीर मालेविच थे। उन्होंने पूर्ण श्वेत पृष्ठभूमि पर एक काला वर्ग चित्र करके प्रदर्शित किया। उनके सौंदर्यशास्त्र का दार्शनिक विचार था – विशुद्ध ज्यामितीय आकारों की सर्वोच्चता। अतः उनकी कृतियां पूर्ण रूप से वस्तुनिरपेक्ष व मौलिक थी, उनमें वस्तु सादृश्य का नाम नहीं था।

मुख्य शब्द : सौंदर्यशास्त्र, कासिमीर मालेविच, टेक्सचर ।

प्रस्तावना

शुरू में मालेविच फाव पद्धति के चित्र बनाते थे, बाद में घनवाद का अध्ययन करके उन्होंने "वर्षा के बाद देहाती प्रभात" वन में विवस्त्र मानवाकृतियां, 1911 जैसी कृतियां बनाई। "काले पर काला" शीर्षक से प्रदर्शित किया तब मालेविच ने सफ़ेद वर्ग को सफ़ेद पृष्ठभूमि पर अंकित करके "सफेद पर सफेद" शीर्षक से प्रदर्शित किया। वस्तुनिरपेक्ष कला का इससे आगे क्या विकास हो सकता था।

चित्र संख्या 1 कासिमीर मालेविच

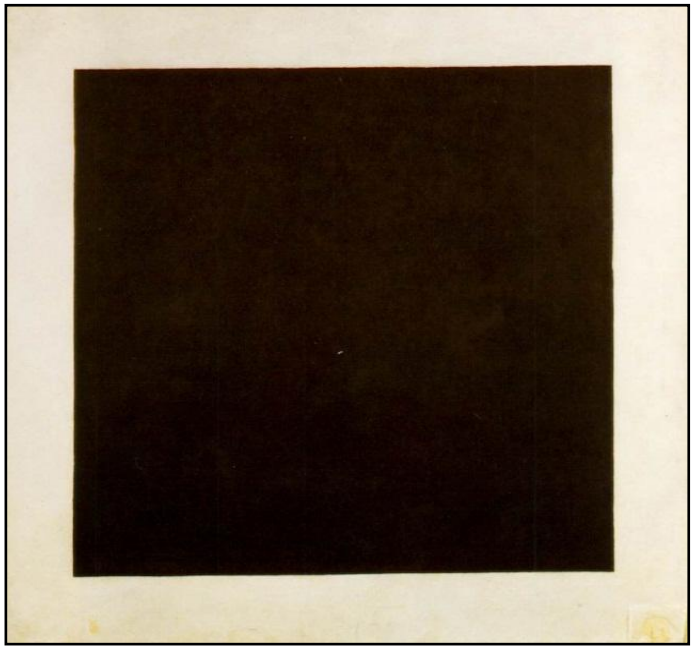

ब्लैक स्कवायर, 1913 (Black Square, 1913)

मालेविच ने तैल रंगो से कैनवास पर 1913 में 'ब्लैक स्क्वायर' नामक शीर्षक से अमूर्तवादी चित्रण का सृजन किया है। जिसमें सफेद पृष्ठभूमि पर एक वर्गाकार काले रंग के आकार की रचना की है जो चित्र भूमि के बीचों–बीच बनाया गया है। इस काले वर्ग पर क्रेकर की सहायता से टेक्सचर का सृजन किया गया है। जो चित्र को प्रभावशाली बना रहा है। इस प्रकार की रचना मालेविच ने कई चित्रों में की है जो विश्व प्रसिद्ध है, जिनसे कला जगत में उनको काफी प्रसिद्धि मिली। इस ब्लैक स्क्वायर के चारों तरफ सफेद पृष्ठभूमि खाली रखी गई है, सफेद पृष्ठभूमि को सपाट रखा गया है।

चित्र संख्या 2 ब्लैक सर्कल, 1913
(Black Circle, 1913)

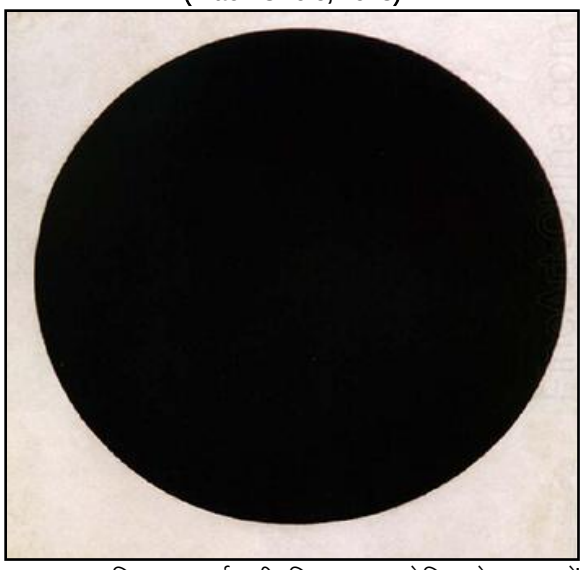

रशियन अमूर्तवादी चित्रकार मालेविच ने 1913 में 'ब्लेक सर्कल' शीर्षक नामक चित्र का सृजन तैल रंग से कैनवास पर किया जिसमें चौकोर सफेद पृष्ठभूमि पर काले रंग का ज्यामितीय वर्गाकार को चित्र के ऊपरी भाग में दाएं और चित्रित किया है, पृष्ठभूमि और काले रंग के वर्गाकार में रंगों का प्रयोग सपाट रूप में किया है कहीं पर भी छाया–प्रकाश को दर्शाने का प्रयास नहीं किया गया। यह तकनीक मालेविच को सबसे अलग दर्शाती हैं। इससे कला जगत में उन्होंने सर्वोच्चवाद को जन्म दिया। इस प्रकार की कला शैली का सृजन करके रशियन चित्रकार मालेविच ने कला को सरल व साधारण रूप में प्रस्तुत करने का काम किया जिससे कला का नया अध्याय लिखा गया।

चित्र संख्या 3 कासिमीर मालेविच

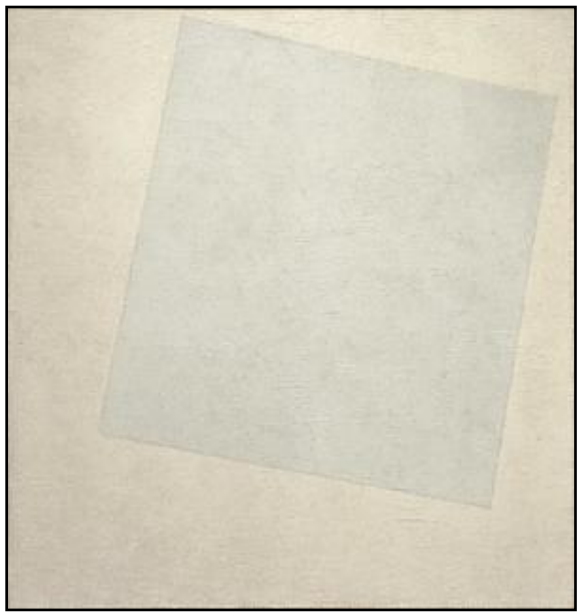

सफेद पर सफेद, 1918 (White on White, 1918)

रशियन चित्रकार कासिमीर मालेविच ने अमूर्त कला में सृजन करते हुए कला को और अधिक सरल व साधारण बनाने के लिए सफेद पृष्ठभूमि पर सफेद एक वर्गाकार ज्यामितीय आकार की रचना की है जिसको टेढ़ा चित्रित करके सर्वोच्चवाद को और रोचक बना दिया है। इस चित्र में सपाट रंग योजना के द्वारा चित्र को प्रभावशाली बनाया गया है। मालेविच ने सुपरमेटिज्म कम्पोजीशन श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए 'सफेद पर सफेद' नामक शीर्षक चित्र संयोजन का सृजन किया है। रशियन चित्रकार मालेविच ने कला को सरल व साधारण रूप में प्रस्तुत करने का जो साहस दिखाया है इन से पहले यह कदम किसी भी कलाकार ने नहीं उठाया।

सन्दर्भ सूची

रवि साखलकर, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010, पृष्ठ संख्या 216–220

डॉ. शेखर चंद्र जोशी, आधुनिक चित्रकला का इतिहास, बड़ा बाजार, बरेली, 2003, पृष्ठ संख्या 80–81

च्मजमत निससमत, Sixteen Kingdom, Catherin Cooke, Abstract Art, Art Design, Great Britain, 1987, page no- 1-80

विनोद भारद्वाज, बृहद आधुनिक कला कोश, दरयागंज, नई दिल्ली, 2006, पृष्ठ संख्या 29–30

Camlla Gray, The Russian Experiment and the 1863-1922, Thames and Hudson, London, 1962, page no. 104-209

Alfred H. Barr, Jr, Painting and Sculpturing the Museum of Modern art 1929-1967, The Museum of Modern Art, new York, 1977, page no. 128-129

David Piper, The All Lustrated Library of Art, Random Houseanc-America, 1981, page no. 99, 621